



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-Section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 600]

नई दिल्ली, बुधवार, अक्टूबर 25, 1995/कार्तिक 3, 1917

No. 600]

NEW DELHI, WEDNESDAY, OCTOBER 25, 1995/KARTIKA 3, 1917

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड

(प्रतिभूति बाजार से संबंधित कपटपूर्ण और प्रभुत्व व्यापारिक व्यवहारों का प्रतिषेध) विनियम 1995

अधिसूचना

बम्बई, 25 अक्टूबर, 1995

का. फा. 856 (ई)—बोर्ड भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 (1992 का 16) की धारा 30 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए एन.डी.आर. द्वारा निम्नलिखित विनियम बनाना है, अर्थात्:—

अध्याय -I

प्रारंभिक

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ (1)—इन विनियमों का संक्षिप्त नाम भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (प्रतिभूति बाजार से संबंधित कपटपूर्ण और प्रभुत्व व्यापारिक व्यवहारों का प्रतिषेध) विनियम, 1995 होगा।

(2) ये राजपत्र में उनके प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं (1)—इन विनियमों में, जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो—

(क) "अधिनियम" से भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 (1992 का 15) अभिप्रेत है;

(ख) "प्रतिभूतियों में व्योहार करना" से किसी व्यक्ति द्वारा या तों प्रधान के रूप में या अधिकार के रूप में किसी भी प्रतिभूति में क्रय विक्रय या अन्यथा व्योहार करना या क्रय विक्रय या अन्यथा व्योहार का करार करना अभिप्रेत है;

(ग) "कपट" में किसी संविदा की एक पार्टी द्वारा या उसकी मनाकूलता से या उसके एजेंट द्वारा, उसकी दूसरी पार्टी या उसके एजेंट को प्रबंधित करने या उससे संविदा करने के लिए उत्प्रेरित करने के आशय से किय गये निम्न कार्यों में से कोई सम्मिलित है:—

- (1) किसी तथ्य के विषय में सुझाव, उम्मा जो कि सही नहीं है उनके द्वारा जिसे इसके सही होने में विश्वास नहीं है।
- (2) तथ्य की जानकारी रखने वाले या तथ्य पर विश्वास करने वाले व्यक्ति द्वारा उक्त तथ्य का सक्रिय छिपाव;
- (3) पूरा करने के आशय के बिना दिया गया कोई बचन;
- (4) प्रबंधन के लिए उपयुक्त कोई अन्य कार्य;
- (5) ऐसा कोई कार्य या लोप, जिसे विधि में विशेष रूप से कपटपूर्ण बौधित किया गया है;

और तदनुसार "कपटपूर्ण" का अर्थ लगाया जायेगा।

स्पष्टीकरण: तथ्यों के विषय में मात्र मौन जो किसी व्यक्ति की संविदा करने की इच्छा को प्रभावित करना संभाव्य हो, कपट नहीं है, जब तक कि मामले की परिस्थितियां ऐसी न हों कि जिनका ध्यान रखते हुए यह मौन रखने वाले व्यक्ति का यह कर्तव्य हो कि वह बोले अथवा जब तक कि उसका मौन स्वयं ही वस्तुस्थिति के समतुल्य न हो।

(घ) "अन्वेषण अधिकारी" से बोर्ड द्वारा विनियम 7 के अधीन अन्वेषण करने हेतु प्राधिकृत कोई व्यक्ति अभिप्रेत है।

(ङ) "विनियम" से इन विनियमों में निहित कोई विनियम अभिप्रेत है, और

(च) "प्रतिभूतियों" से प्रतिभूति संविदा (विनियमन) अधिनियम, 1956 की धारा 2 में यथापरिभाषित प्रतिभूतियां अभिप्रेत हैं।

अध्याय - II

प्रतिभूति बाजार से संबंधित कपटपूर्ण और झूठे व्यापारिक व्यवहारों का प्रतिषेध

3. प्रतिभूतियों में कतिपय व्यवहारों का प्रतिषेध—कोई व्यक्ति—कपटपूर्ण तरीके से प्रतिभूतियों में क्रय विक्रय या अन्यथा व्यवहार नहीं करेगा ।

4. बाजार हेरफेर के विरुद्ध प्रतिषेध—कोई व्यक्ति—

- (क) प्रतिभूतियों का मूल्य कृत्रिम रूप से बढ़ाने या मंदी प्रथवा तद्द्वारा किसी व्यक्ति द्वारा प्रतिभूतियों का क्रय या विक्रय उत्प्रेरित करने के आशय से प्रतिभूतियों में लेनदेनों को या तो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावी नहीं करेगा, भाग नहीं लेगा या उनमें नहीं लगेगा;
- (ख) किसी क्रय में भाग नहीं लेगा, जिससे प्रतिभूति बाजार में व्यापार का मिथ्या या भ्रामक रूप निमित्त करना परिणत हो;
- (ग) किसी कृत्य में भाग नहीं लेगा, जो ऐसे लेनदेनों के आशय पर प्रतिभूतियों के मूल्यों के प्रतिफलन में परिणामित होता हो, जो वास्तविक व्यापार लेनदेन न हो;
- (घ) ऐसी किन्हीं प्रतिभूतियों की खरीद या बिक्री में नहीं लगेगा जिनका उद्देश्य हितकारी स्वामित्व का अंतरण प्रभावी करना नहीं बल्कि केवल प्रतिभूतियों के बाजार मूल्य को बढ़ाने, मंदी या अस्थिरता पैदा करने के उपाय के रूप में प्रवर्तित होना है ;
- (ङ) प्रतिभूतियों का बाजार मूल्य बढ़ाने, मंदी या उतार-चढ़ाव करने के एकमात्र उद्देश्य से किसी अन्य व्यक्ति को किसी प्रतिभूति की खरीद या बिक्री के लिए उत्प्रेरित करने के लिए किसी व्यक्ति को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धन या नकद मूल्य की वस्तु, का भुगतान प्रस्थापना नहीं करेगा या भुगतान या प्रस्थापना करने के लिए सहमत नहीं होगा ।

5. प्रतिभूतियों का क्रय या विक्रय उत्प्रेरित करने के लिए भ्रामक कथनों का प्रतिषेध—कोई व्यक्ति ऐसा कोई कथन नहीं करेगा या ऐसी सूचना का प्रसार नहीं करेगा जो—(क) किसी तात्त्विक विशिष्ट के विषय में भ्रामक हो; और (ख) कोई अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रतिभूतियों की बिक्री या खरीद को उत्प्रेरित करना संभाव्य हो या जिससे प्रतिभूतियों के बाजार मूल्य को बढ़ाने या मंदी के प्रभाव की संभावना हो, यदि, जब वह कथन करता या सूचना प्रसारित करता है—

- (i) वह परवाह नहीं करता कि कथन या सूचना सही है या गलत; या
- (ii) वह जानता है, या समुचित रूप से उसे जानता चाहिए कि किसी तात्त्विक विशिष्ट के संबंध में कथन या सूचना भ्रामक है ।

इस उप विनियम में कुछ भी, निम्न के संबंध में सद्भावपूर्वक की गयी किसी सामान्य टिप्पणी पर लागू नहीं होगा—

- (क) सरकार की आधिकारिक नीति,
- (ख) देश में आर्थिक स्थिति,
- (ग) प्रतिभूति बाजार की प्रवृत्तियाँ, या
- (घ) समाज प्रकृति का कोई अन्य सामान्य, बाहे ऐसी ऐसी टिप्पणी सार्वजनिक तौर पर की गयी हों या भिजी तौर पर ।

6. प्रतिभूतियों से संबंध झूठे व्यापारिक व्यवहारों पर प्रतिषेध—कोई भी व्यक्ति—

- (क) अपने व्यापार के दौरान, जानबूझकर किसी ऐसे कृत्य में नहीं लगेगा या व्यवहार नहीं करेगा, जो किसी प्रतिभूति की खरीद या बिक्री, या अन्य व्यवहार के संबंध में किसी व्यक्ति पर कपट या धोखे के रूप में प्रवर्तित होगा;
- (ख) स्वयं अपनी ओर से या किसी व्यक्ति की ओर से जानबूझकर, प्रतिभूतियों के संबंध में उसी प्रतिभूति के लिए खरीद, बिक्री या अन्य व्यवहार के संबंध में अपने ग्राहक के किसी आदेश के निष्पादन के संबंध में तक उन प्रतिभूतियों में क्रय, विक्रय या व्यवहार नहीं करेगा ।
- इस खंड में निहित कुछ भी वहां लागू नहीं होगा, जहां ग्राहक के अनुदेशों के अनुसार ग्राहक के लिए लेनदेन केवल विनिर्दिष्ट शर्तों के अधीनता विशिष्ट परिस्थितियों में प्रभावी किया जाता हो;
- (ग) जानबूझकर और वर्तमान में प्रवृत्त किसी भी विधि का उल्लंघन करते हुए अंतरिती के नाम में प्रतिभूतियों के अंतरण में या किसी अंतरिती को प्रतिभूतियों से संबंध दस्तावेजों के प्रेषण में विलम्ब नहीं करेगा;
- (घ) बाजार हेरफेर के प्रयोजन से लेखों, खातों और अभिलेखों के (बाहे दस्तावेजों के रूप में या कंप्यूटर में या अन्य किसी रूप में बनाये रखे गये हों) मिथ्याकरण में नहीं लगेगा ;
- (ङ) एक अधिकारी के रूप में कार्य करते हुए एक ग्राहक के साथ उस मूल्य के प्रतिरिक्त किसी मूल्य पर लेनदेन निष्पादित नहीं करेगा जिस पर वह लेनदेन उसके द्वारा बाहे एक्सचेंज में या अन्यथा या उस मूल्य से इतर मूल्य पर निष्पादित किया गया था जिस मूल्य पर वह किसी अन्य ग्राहक के लेनदेन के विरुद्ध समायोजित किया गया था ।

अध्याय-III

अधिकृत उल्लंघनों का अन्वेषण

7. बोर्ड की, अन्वेषण हेतु आदेश देने की शक्ति—(1) बोर्ड, स्वयंसेवा से या इसके द्वारा जानकारी प्राप्त होने पर, प्रतिभूतियों का क्रय, विक्रय या व्यवहार करने वाले किसी व्यक्ति के आचरण और कार्यकलापों के संबंध में एक अन्वेषण अधिकारी द्वारा, जिसे बोर्ड ठीक समझे, अन्वेषण शुरू करवा सकता है,

परन्तु यह कि उप विनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रयोजनों में से किसी के अलावा ऐसा अन्वेषण नहीं किया जायेगा ।

(2) उप विनियम (1) में निर्दिष्ट प्रयोजन निम्न हैं; अर्थात्—

- (क) अधिनियमित करना कि क्या कोई ऐसी परिस्थितियाँ हैं जो किसी व्यक्ति को इन विनियमों या इनके अधीन जारी किये गये किसी निर्देश का उल्लंघन करने को बाध्य ठहराती हैं;
- (ख) किसी विविधानकर्ता, मध्यवर्ती या किसी अन्य व्यक्ति से विनियम के किसी भी प्रकार के उल्लंघन के संबंध में प्राप्त शिकायतों का अन्वेषण करना, ।

8. अन्वेषण के लिए प्रक्रिया—(1) विनियम 7 के अधीन किया जाने वाला अन्वेषण करने से पूर्व, बोर्ड सूचना देगा ।

(2) उप विनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी जहां बोर्ड का समाधान हो जाता है कि विनिधानकर्ताओं के हित या लोकहित में ऐसी सूचना नहीं देनी चाहिए, वहां वह एक लिखित आदेश द्वारा और यथासाध्य कारण अधिलिखित करते हुए निवेश देगा कि अन्वेषण ऐसी सूचना के बिना ही किया जाए ।

(3) इस विनियम के उपबंधों के अधीन, विनियम (7) के अधीन प्राप्त एक आदेश, अन्वेषण अधिकारी द्वारा अन्वेषण करने के लिए पर्याप्त अधिकार होगा, और आदेश की एक प्राधिकृत प्रति प्रस्तुत किये जाने पर, संबंध व्यक्ति विनियम 9 में अधिरोपित कर्तव्य का पालन करने के लिए आबद्ध होगा।

9. अभिलेख आदि प्रस्तुत करने का कर्तव्य:—(1) प्रत्येक व्यक्ति का, जिसके संबंध में विनियम 8 के अधीन अन्वेषण का आदेश दिया गया है, कर्तव्य होगा कि वह ऐसी बहियाँ, लेखा और अपनी अभिरक्षा और नियंत्रण में अन्य दस्तावेज अन्वेषण अधिकारी के समक्ष पेश करे और उसे वह विवरण और जानकारी दे जो अन्वेषण के प्रयोजन के लिए कथित अधिकारी द्वारा युक्तियुक्त तौर पर अपेक्षित हो।

(2) उप विनियम (1) के उपबंधों की व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना ऐसा व्यक्ति—

(क) अन्वेषण अधिकारी को अन्वेषण के प्रयोजन के लिए सभी युक्तियुक्त समय पर ऐसे व्यक्ति के अधिभोग में परिसरों तक पहुँच को अनुज्ञात करेगा;

(ख) अन्वेषण अधिकारी को अपने कब्जे या नियंत्रण में किन्हीं बहियों, लेखों और अन्य वस्तुओं की (चाहे दस्तो रूप में रखे गये हों या कंप्यूटर में या अन्य किसी रूप में) परीक्षा करने की युक्तियुक्त सुविधा देगा, जो अन्वेषण के प्रयोजन के लिए युक्तियुक्त तौर पर अपेक्षित है;

(ग) ऐसे अन्वेषण अधिकारी को ऐसी किसी लेखा बहियों, लेखों और अभिलेखों की प्रतियाँ उपलब्ध करायेगा जो, अन्वेषण अधिकारी की राय में अन्वेषण के लिए सुसंगत है, या यथास्थिति, उसे उनके कंप्यूटर आउटपुट से जाने की अनुमति देगा;

(3) अन्वेषण अधिकारी को, अन्वेषण के प्रयोजन से, संबंध व्यक्ति या ऐसे व्यक्ति के किसी निदेशक, भागीदार, सदस्य या कर्मचारी को सीखिक परीक्षा करने, और कथन लेखबद्ध करने की शक्ति होगी;

(4) प्रत्येक संबंध व्यक्ति का यह कर्तव्य होगा कि, वह अन्वेषण अधिकारी को, निरीक्षण के संबंध में ऐसी सभी सहायता और अन्यथा ऐसी सभी सहयोग दे जो अन्वेषण के संबंध में युक्तियुक्त तौर पर अपेक्षित हो तथा ऐसे अन्वेषण से सुसंगत जानकारी प्रस्तुत करे, जो ऐसे अधिकारी द्वारा युक्तियुक्त तौर पर मांगी जाए।

10. बोंड को रिपोर्ट प्रस्तुत करना—अन्वेषण अधिकारी, अन्वेषण पूरा हो जाने पर, संबंध व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत किये गये सभी सुसंगत तथ्यों और प्रस्तुतीकरणों को ध्यान में रखकर, बोंड के समक्ष रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा।

11. बोंड की निदेश जारी करने की शक्ति—बोंड, विनियम 10 में निर्दिष्ट रिपोर्ट पर विचार करने के पश्चात्, और संबंध व्यक्ति को सुनवाई का युक्तियुक्त अवसर देने के पश्चात् विनियम 12 में निर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए, अधिनियम, उसके अधीन बताये गये नियमों और विनियमों के उपबंधों के सम्यक् अनुपालन हेतु निदेश जारी कर सकेगा।

12. निदेशों का प्रयोजन:—विनियम 11 के अधीन जारी किये जा सकने वाले निदेशों के प्रयोजन निम्नानुसार हैं, अर्थात्:—

(क) संबंध व्यक्ति को निदेश देना कि वह प्रतिभूतियों में किसी विशिष्ट रीति से व्योहार न करे;

(ख) संबंध व्यक्ति से अपेक्षा करना कि अपने अधिकारियों अन्य कर्मचारियों या प्रतिनिधियों में से किसी से भी किसी भी विशिष्ट रीति से प्रतिभूतियों में व्योहार से बिरत रहने की अपेक्षा करे;

(ग) संबंध व्यक्ति को इन विनियमों के उल्लंघन में अज्ञित किन्हीं भी प्रतिभूतियों का ध्वनन करने से प्रतिषिद्ध करे;

(घ) संबंध व्यक्ति को इन विनियमों का उल्लंघन करके अज्ञित की गयी ऐसी किसी भी प्रतिभूति का उस रीति से ध्वनन करने का निदेश देना, जिसे कोई यथापूर्व स्थिति पूर्व में प्रत्यावर्तन के लिए ठीक समझे।

13. पंजीकरण का निषेध या रद्दकरण:—बोंड विनियम 11 में निर्दिष्ट परिस्थितियों में, और विनियम 12 के अधीन अपनी शक्ति पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, अधिनियम की धारा 12 के अधीन पंजीकरण प्रमाणपत्र धारण करने वाले किसी मध्यवर्ती के पंजीकरण के निषेध या रद्दकरण के लिए कार्रवाई शुरू कर सकता है।

परन्तु यह कि ऐसा कोई भी पंजीकरण प्रमाणपत्र तब तक निलंबित या रद्द नहीं किया जायेगा, जब तक कि ऐसे मध्यवर्ती पर लागू विनियम में निर्दिष्ट प्रक्रिया का अनुपालन न किया गया हो।

[फा. सं. भा प्र वि बो/एनई/95]

वेवेन्द्र राज मेहता, अध्यक्ष

SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA (Prohibition of Fraudulent and Unfair Trade Practices relating to Securities Market) Regulations, 1995

NOTIFICATION

Bombay, the 25th October, 1995

S.O. 856(E).—In exercise of the powers conferred by section 30 of The Securities and Exchange Board of India, Act, 1992 (15 of 1992), the Board hereby makes the following regulations, namely:—

CHAPTER I

PRELIMINARY

1. Short title and commencement.—(1) These regulations may be called the Securities and Exchange Board of India (Prohibition of Fraudulent and Unfair Trade Practices relating to Securities Markets) Regulations, 1995.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definitions.—(1) In these regulations, unless the context otherwise requires—

(a) "Act" means the Securities and Exchange Board of India Act, 1992 (15 of 1992);

(b) "dealing in securities" means an act of buying, selling or otherwise dealing in any security or agreeing to buy, sell or otherwise deal in any security by any person either as principal or as agent;

(c) "fraud" includes any of the following acts committed by a party to a contract, or with his connivance, or by his agent, with intent to deceive another party thereto or his agent, or to induce him to enter into the contract:—

(1) the suggestion, as to a fact, of that which is not true, by one who does not believe it to be true;

(2) the active concealment of a fact by one having knowledge or belief of the fact;

(3) a promise made without any intention of performing it;

(4) any other act fitted to deceive;

(5) any such act or omission as the law specially declares to be fraudulent;

and "fraudulent" shall be construed accordingly.

Explanation.—Mere silence as to facts likely to affect the willingness of a person to enter into a contract is not fraud, unless the circumstances of the case are such that, regard being had to them, it is the duty of the person keeping silence to speak, or unless his silence is in itself equivalent to speech.

(d) "investigating officer" means any person authorised by the Board to undertake investigation under regulation 7;

- (e) "regulation" means a regulation contained in these regulations; and
- (f) "securities" means securities as defined in section 2 of the Securities Contracts (Regulation) Act, 1956.

CHAPTER II

PROHIBITION OF FRAUDULENT AND UNFAIR TRADE PRACTICES RELATING TO SECURITIES MARKET

3. Prohibition of certain dealings in securities.—No person shall buy, sell or otherwise deal in securities in a fraudulent manner.

4. Prohibition against Market Manipulation.—No person shall—

- (a) effect, take part in, or enter into, either directly or indirectly, transactions in securities, with the intention of artificially raising or depressing the prices of securities and thereby inducing the sale or purchase of securities by any person;
- (b) indulge in any act, which is calculated to create a false or misleading appearance of trading on the securities market;
- (c) indulge in any act which results in reflection of prices of securities based on transactions that are not genuine trade transactions;
- (d) enter into a purchase or sale of any securities, not intended to effect transfer of beneficial ownership but intended to operate only as a device to inflate, depress, or cause fluctuations in the market price of securities;
- (e) pay, offer or agree to pay or offer, directly or indirectly, to any person any money or money's worth for inducing another person to purchase or sell any security with the sole object of inflating, depressing, or causing fluctuations in the market price of securities.

5. Prohibition of misleading statements to induce sale or purchase of securities.—(1) No person shall make any statement, or disseminate any information which—

- (a) is misleading in a material particular; and
- (b) is likely to induce the sale or purchase of securities by any other person or is likely to have the effect of increasing or depressing the market price of securities, if when he makes the statement or disseminates the information—
 - (i) he does not care whether the statement or information is true or false; or
 - (ii) he knows, or ought reasonably to have known that the statement or information is misleading in any material particular.

Nothing in this sub-regulation shall apply to any general comments made in good faith in regard to—

- (a) the economic policy of the Government,
- (b) the economic situation in the country,
- (c) trends in the securities markets, or
- (d) any other matter of a similar nature,

whether such comments be made in public or in private.

6. Prohibition on unfair trade practice relating to securities.—No person shall—

- (a) in the course of his business, knowingly engage in any act, or practice which would operate as a fraud upon any person in connection with the purchase or sale of, or any other dealing in, any securities;
- (b) on his own behalf or on behalf of any person, knowingly buy, sell or otherwise deal in securities, pending the execution of any order of his client relating to the same security for purchase, sale or other dealings in respect of securities.

Nothing contained in this clause shall apply where according to the client's instruction, the transaction for the client is to be effected only under specified conditions or in specified circumstances;

- (c) intentionally and in contravention of any law for the time being in force delays the transfer of securities in the name of the transferee or the despatch of securities or connected documents to any transferee;
- (d) indulge in falsification of the books, accounts and records (whether maintained manually or in computer or in any other form);
- (e) when acting as an agent, execute a transaction with a client at a price other than the price at which the transaction was executed by him, whether on a stock exchange or otherwise, or at a price other than the price at which it was offset against the transaction of another client.

CHAPTER III

INVESTIGATION INTO ALLEGED CONTRAVENTIONS

7. Power of the Board to order investigation.—(1) The Board may, suo-motu or upon information received by it, cause an investigation to be made in respect of the conduct and affairs of any person buying, selling or otherwise dealing in securities, by an investigating officer whom the Board considers fit:

Provided that no such investigation shall be made except for the purposes specified in sub-regulation (2).

(2) The purposes referred to in sub-regulation (1) are the following, namely—

- (a) to ascertain whether there are any circumstances which would render any person guilty of having contravened any of these regulations or any directions issued thereunder;
- (b) to investigate into any complaint of any contravention of the regulation, received from any investor, intermediary or any other person.

8. Procedure for investigation.—(1) Before causing an investigation to be made under regulation 7, the Board shall give notice.

(2) Notwithstanding anything contained in sub-regulation (1) where the Board is satisfied that in the interest of the investors or in the public interest, no such notice should be given, it may, by an order in writing and recording the reasons as far as practicable, direct that the investigation be undertaken without such notice.

(3) Subject to the provisions of this regulation, an order passed under regulation 7 shall be a sufficient authority for the Investigating Officer to undertake the investigation and, on production of an authenticated copy of the order, the person concerned shall be bound to carry out the duty imposed in regulation 9.

9. Duty to produce records, etc.—(1) It shall be the duty of every person in respect of whom an investigation has been ordered under regulation 8, to produce to the Investigating Officer such books, accounts and other documents in his custody or control and furnish him with such statements and information as the said officer may reasonably require for the purposes of the investigation.

(2) Without prejudice to the generality of the provisions of sub-regulation (1), such person shall—

- (a) allow the Investigating Officer to have access to the premises occupied by such person at all reasonable times for the purpose of investigation;
- (b) extend to the Investigating Officer reasonable facilities for examining any books, accounts and other documents in his custody or control (whether kept manually or in computer or in any other form) reasonably required for the purposes of the investigation;

- (c) provide to such Investigating Officer copies of any such books, accounts and records which, in the opinion of the Investigating Officer, are relevant to the investigation or, as the case may be, allow him to take out computer outprints thereof.

(3) The Investigating Officer shall, for the purpose of investigation, have power to examine orally and to record the statement of the person concerned, any director, partner, member or employee of such person.

(4) It shall be the duty of every person concerned, to give to the Investigating Officer, all such assistance and otherwise extend all such co-operation as may reasonably be required in connection with the investigation and to furnish information relevant to such investigation as may be reasonably sought by such officer.

10. Submission of Report to the Board.—The Investigating Officer shall, on completion of the investigation, after taking into account all relevant facts and submissions made by the person concerned, submit a report to the Board.

11. Power of the Board to issue directions.—The Board may, after consideration of the report referred to in regulation 10, and after giving reasonable opportunity of hearing to the person concerned, issue directions for ensuring due compliance with the provisions of the Act, rules and regulations made thereunder, for the purposes specified in regulation 12.

12. Purpose of directions.—The purposes for which directions under regulation 11 may be issued are the following, namely—

- (a) directing the person concerned not to deal in securities in any particular manner;
- (b) requiring the person concerned to call upon any of its officers, other employees or representatives to refrain from dealing in securities in any particular manner;
- (c) prohibiting the person concerned from disposing of any of the securities acquired in contravention of these regulations;
- (d) directing the person concerned to dispose of any such securities acquired in contravention of these regulations, in such manner as the Board may deem fit, for restoring the status-quo ante.

13. Suspension or cancellation of Registration.—The Board may, in the circumstances specified in regulation 11, and without prejudice to its power under regulation 12, initiate action for suspension or cancellation of registration of an intermediary holding a certificate of registration under section 12 of the Act:

Provided that no such certificate of registration shall be suspended or cancelled unless the procedure specified in the regulation applicable to such intermediary is complied with.

[F. No. SEBI/LE /95]

D. R. MEHTA, Chairman

